Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=211
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, APRIL-MAY 2023, VOL-11/57

सहयोगात्मक एवं रचनात्मक समस्या-समाधान मॉडल का समाजशास्त्रीय विश्लेषण: सामाजिक अंतःक्रिया, शिक्षा और व्यवहार परिवर्तन के विशेष संदर्भ में

डॉ. नवनीत कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, जे.एस. हिंदू पी.जी. कॉलेज, अमरोहा, उत्तर प्रदेश

Abstract

वर्तमान समाज में पारिवारिक संबंधों, शैक्षिक संस्थानों, कार्यस्थलों तथा सामुदायिक जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के समाधान के लिए सहयोगात्मक एवं रचनात्मक चिंतन की भूमिका निरंतर महत्त्वपूर्ण होती जा रही है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य मनोविज्ञान में विकसित सहयोगात्मक समस्या-समाधान (Collaborative Problem Solving—CPS) तथा रचनात्मक समस्या-समाधान (Creative Problem Solving) मॉडलों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। शोध में वर्ष 2022 से पूर्व प्रकाशित पुस्तकों, शोधपत्रों तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के उपलब्ध द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। रॉस ग्रीन के सहयोगात्मक एवं अग्रसक्रिय समाधान मॉडल तथा एलेक्स ओसबोर्न और सिडनी पार्न्स के रचनात्मक समस्या-समाधान दृष्टिकोण को सामाजिक अधिगम, सामाजिक अंतःक्रिया, समूह-गतिशीलता, सामाजिक नियंत्रण और सामूहिक निर्णय-निर्माण की अवधारणाओं के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।
OECD के PISA 2015 आकलन में 51 देशों एवं अर्थव्यवस्थाओं के परिणामों ने सहयोगात्मक समस्या-समाधान को एक विशिष्ट दक्षता के रूप में रेखांकित किया। इसी प्रकार, वर्ष 2015 में प्रकाशित एक नियंत्रित नैदानिक परीक्षण ने विरोधी-अवज्ञाकारी व्यवहार वाले बच्चों के संदर्भ में CPS की उपयोगिता का परीक्षण किया। इन साक्ष्यों के आलोचनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समस्या-समाधान केवल व्यक्तिगत संज्ञानात्मक क्षमता नहीं, बल्कि सामाजिक संबंधों, संवाद, विश्वास, संस्थागत वातावरण और सामूहिक सहभागिता से जुड़ी प्रक्रिया भी है। शोध का निष्कर्ष है कि शिक्षा, परिवार और समुदाय में इन मॉडलों का संदर्भानुकूल उपयोग संवादपूर्ण, सहभागितापरक तथा समावेशी सामाजिक वातावरण के विकास में योगदान दे सकता है।

प्रमुख शब्द: *सहयोगात्मक समस्या-समाधान, रचनात्मक चिंतन, समाजशास्त्रीय विश्लेषण, सामाजिक अंतःक्रिया, सामाजिक अधिगम, समूह-गतिशीलता, शैक्षिक सहभागिता।*

1. प्रस्तावना

समाज एक गतिशील व्यवस्था है, जिसमें व्यक्ति विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं, संस्थाओं, समूहों और संबंधों के माध्यम से परस्पर जुड़ा रहता है। परिवार, विद्यालय, महाविद्यालय, कार्यस्थल तथा समुदाय में व्यक्तियों की आवश्यकताओं, मूल्यों, अपेक्षाओं और संसाधनों में अंतर होने के कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल अधिकार, दंड अथवा व्यक्तिगत निर्णय के आधार पर

Copyright@2023 Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

करना सदैव प्रभावी नहीं होता। अनेक परिस्थितियों में समस्या के वास्तविक कारणों को समझना, विभिन्न दृष्टिकोणों को स्वीकार करना तथा पारस्परिक सहमति विकसित करना अधिक उपयोगी होता है।

मनोविज्ञान में समस्या-समाधान को संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं, निर्णय-निर्माण और व्यवहार परिवर्तन से जोड़कर देखा जाता है। समाजशास्त्र इस प्रक्रिया को सामाजिक संरचना, समूह-संबंधों, सामाजिक मानदंडों, शक्ति-संबंधों और संस्थागत परिस्थितियों के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझने का अवसर प्रदान करता है।

इस संदर्भ में CPS के दो प्रमुख दृष्टिकोण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पहला, रॉस ग्रीन द्वारा विकसित *Collaborative & Proactive Solutions*, जो बच्चों के चुनौतीपूर्ण व्यवहार के पीछे निहित अनसुलझी समस्याओं तथा कौशलगत कठिनाइयों को समझने पर बल देता है। दूसरा, ओसबोर्न–पार्न्स परंपरा का *Creative Problem Solving* मॉडल, जो समस्याओं की पहचान, विचारों के सृजन, विकल्पों के मूल्यांकन और समाधान के क्रियान्वयन की व्यवस्थित प्रक्रिया प्रस्तुत करता है।

यद्यपि दोनों मॉडलों के उद्देश्य समान नहीं हैं, फिर भी इनमें संवाद, वैकल्पिक दृष्टिकोण, सहभागिता और समाधान-निर्माण जैसे तत्त्व समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। इनका समाजशास्त्रीय अध्ययन यह समझने में सहायता करता है कि व्यक्ति और समूह सामाजिक परिस्थितियों में समस्याओं की पहचान कैसे करते हैं तथा उनके समाधान के लिए सामूहिक संसाधनों का उपयोग किस प्रकार करते हैं।

2. अध्ययन की समस्या

परंपरागत सामाजिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों में समस्या-समाधान की प्रक्रिया कई बार एकपक्षीय निर्णय, कठोर अनुशासन, सीमित संवाद अथवा स्थापित मान्यताओं पर आधारित होती है। ऐसी परिस्थितियों में समस्या के मूल कारणों की पहचान किए बिना उसके बाहरी व्यवहार को नियंत्रित करने का प्रयास किया जा सकता है।

दूसरी ओर, रचनात्मक समस्या-समाधान की प्रक्रिया में अनेक विचार उत्पन्न करने के बाद उनका तार्किक मूल्यांकन आवश्यक होता है। केवल विचारों की बहुलता से प्रभावी समाधान प्राप्त नहीं होता; इसके लिए सामाजिक स्वीकार्यता, उपलब्ध संसाधनों, संस्थागत सीमाओं और क्रियान्वयन की संभावनाओं पर भी विचार करना पड़ता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की केंद्रीय समस्या यह है कि सहयोगात्मक एवं रचनात्मक समस्या-समाधान मॉडलों की सहायता से सामाजिक संबंधों, संस्थागत व्यवहार, समूह-सहभागिता और सामूहिक निर्णय-निर्माण को किस सीमा तक समझा जा सकता है तथा इनकी उपयोगिता के लिए किन सामाजिक परिस्थितियों का होना आवश्यक है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. सहयोगात्मक तथा रचनात्मक समस्या-समाधान मॉडलों की सैद्धांतिक विशेषताओं का विवेचन करना।
2. CPS मॉडलों का सामाजिक अंतःक्रिया, सामाजिक अधिगम तथा समूह-गतिशीलता के संदर्भ में विश्लेषण करना।
3. वर्ष 2022 से पूर्व प्रकाशित द्वितीयक आँकड़ों एवं शोध निष्कर्षों का परीक्षण करना।

4. परिवार, विद्यालय, उच्च शिक्षा और सामुदायिक जीवन में इन मॉडलों की संभावित उपयोगिता का आकलन करना।
5. समस्या-समाधान की प्रक्रिया में संवाद, सहभागिता, शक्ति-संबंधों और सामाजिक समावेशन की भूमिका स्पष्ट करना।
6. भारतीय सामाजिक एवं शैक्षिक संस्थानों में इन मॉडलों के संदर्भानुकूल प्रयोग के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध प्रश्न

1. सहयोगात्मक एवं रचनात्मक समस्या-समाधान के प्रमुख सैद्धांतिक आधार क्या हैं?
2. सामाजिक अंतःक्रिया तथा समूह-सहभागिता समस्या-समाधान की प्रभावशीलता को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?
3. उपलब्ध पूर्ववर्ती शोध इन मॉडलों की उपयोगिता के संबंध में क्या संकेत देते हैं?
4. सामाजिक असमानता, पदानुक्रम और संस्थागत संस्कृति इन मॉडलों के क्रियान्वयन को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं?

5. सैद्धांतिक आधार

5.1 सहयोगात्मक समस्या-समाधान मॉडल

रॉस ग्रीन का सहयोगात्मक एवं अग्रसक्रिय समाधान दृष्टिकोण इस मान्यता पर आधारित है कि बच्चों के चुनौतीपूर्ण व्यवहार को केवल अनुशासनहीनता या जानबूझकर किए गए विरोध के रूप में नहीं देखना चाहिए। कई परिस्थितियों में व्यवहार संबंधी कठिनाइयाँ उन अनसुलझी समस्याओं तथा कौशलगत सीमाओं से जुड़ी होती हैं, जिनसे बच्चा जूझ रहा होता है।

इस मॉडल का प्रसिद्ध सिद्धांत है—"बच्चे अच्छा करते हैं, यदि वे कर सकते हैं।" इसका आशय यह नहीं है कि प्रत्येक अनुचित व्यवहार केवल कौशल की कमी से उत्पन्न होता है, बल्कि यह है कि व्यवहार को समझने के लिए उसकी परिस्थितियों, संबंधित अपेक्षाओं तथा व्यक्ति की क्षमताओं की जाँच आवश्यक है।

मॉडल की प्रमुख प्रक्रिया को तीन भागों में समझा जा सकता है।

(क) सहानुभूति चरण (Empathy Step): संबंधित व्यक्ति की कठिनाइयों, अनुभवों और दृष्टिकोण को बिना तत्काल निर्णय दिए समझना।

(ख) वयस्क की चिंता स्पष्ट करना (Define Adult Concerns): सुरक्षा, समय, पारिवारिक दायित्व अथवा संस्थागत आवश्यकताओं से संबंधित वास्तविक चिंता को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना।

(ग) सहयोगात्मक समाधान (Invitation): दोनों पक्षों की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए ऐसे समाधान की तलाश करना, जो व्यावहारिक हो और संबंधित पक्षों के लिए स्वीकार्य हो।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह मॉडल संवाद, पारस्परिक समझ, भूमिका-अपेक्षाओं और सामाजिक संबंधों के पुनर्गठन से जुड़ता है। परिवार में अभिभावक और बच्चे तथा शैक्षिक संस्थान में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संवादपूर्ण संबंधों के विकास में इसकी अवधारणाएँ उपयोगी हो सकती हैं।

हालाँकि, इस मॉडल का मूल क्षेत्र बाल-व्यवहार और उससे संबंधित समस्याएँ हैं। इसलिए इसे प्रत्येक सामाजिक संघर्ष के लिए स्वतः प्रभावी समाधान मानने के बजाय परिस्थितिनुसार लागू किया जाना चाहिए।

5.2 रचनात्मक समस्या-समाधान मॉडल

रचनात्मक समस्या-समाधान मॉडल का विकास एलेक्स ओसबोर्न और सिडनी पार्न्स के कार्यों से जुड़ा है। इसका उद्देश्य समस्याओं के प्रति नवीन दृष्टिकोण विकसित करना तथा कल्पनाशीलता और तार्किक मूल्यांकन के बीच संतुलन स्थापित करना है। इस प्रक्रिया में दो प्रमुख प्रकार के चिंतन महत्त्वपूर्ण हैं।

अपसारी चिंतन (Divergent Thinking): किसी समस्या के संभावित कारणों, वैकल्पिक दृष्टिकोणों और अनेक समाधानों की खोज करना।

अभिसारी चिंतन (Convergent Thinking): उपलब्ध विकल्पों का तार्किक मूल्यांकन करना तथा व्यवहार्य, उपयोगी और स्वीकार्य समाधान का चयन करना।

रचनात्मक समस्या-समाधान की प्रक्रिया को निम्नलिखित चरणों में व्यवस्थित किया जा सकता है:

1. **समस्या की पहचान एवं स्पष्टीकरण:** समस्या के वास्तविक स्वरूप और उससे प्रभावित पक्षों की पहचान।
2. **तथ्य एवं जानकारी का संकलन:** उपलब्ध प्रमाणों, अनुभवों और परिस्थितियों का अध्ययन।
3. **विचार-उत्पादन:** आलोचना को तत्काल स्थगित रखकर संभावित समाधानों का निर्माण।
4. **समाधान का विकास:** विकल्पों की उपयोगिता, सीमाओं, लागत और सामाजिक प्रभावों का मूल्यांकन।
5. **क्रियान्वयन:** चयनित समाधान को लागू करना, परिणामों का निरीक्षण करना और आवश्यकतानुसार संशोधन करना।

ओसबोर्न–पार्न्स परंपरा के विभिन्न संस्करणों में चरणों के नाम तथा उनकी संख्या में अंतर मिलता है। अतः उपर्युक्त क्रम को एक व्यावहारिक रूपरेखा के रूप में समझना उचित होगा, न कि सभी संस्करणों का अपरिवर्तनीय प्रारूप। समाजशास्त्रीय स्तर पर यह मॉडल सामूहिक निर्णय-निर्माण, सामाजिक नवाचार, संस्थागत सुधार और सामुदायिक समस्याओं के समाधान में उपयोगी विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करता है।

5.3 दोनों मॉडलों का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

विश्लेषण का आधार	सहयोगात्मक एवं अग्रसक्रिय समाधान	रचनात्मक समस्या-समाधान
प्रमुख उद्देश्य	व्यवहारगत कठिनाइयों और अनसुलझी समस्याओं को समझना	नवीन एवं व्यवहार्य समाधान विकसित करना
प्रमुख प्रक्रिया	सहानुभूति, चिंता की स्पष्टता और संयुक्त समाधान	समस्या-विश्लेषण, विचार-उत्पादन, मूल्यांकन और क्रियान्वयन
केंद्रीय इकाई	व्यक्ति तथा उसके पारस्परिक संबंध	व्यक्ति, समूह अथवा संगठन
सामाजिक महत्त्व	विश्वास, संवाद और संघर्ष में कमी की संभावना	नवाचार, विकल्पों की खोज और सामूहिक निर्णय

प्रमुख सीमा	प्रत्येक व्यवहारगत समस्या की व्याख्या केवल कौशलगत कमी से नहीं की जा सकती	रचनात्मक विचार अपने आप में सामाजिक स्वीकार्यता या सफलता सुनिश्चित नहीं करते

6. साहित्य समीक्षा

6.1 ओसबोर्न एवं पार्न्स का योगदान

ओसबोर्न ने रचनात्मक विचार-उत्पादन और ब्रेनस्टॉर्मिंग को व्यवस्थित रूप प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। पार्न्स ने रचनात्मक चिंतन को समस्या-समाधान की क्रमबद्ध प्रक्रिया से जोड़कर विकसित किया। इस परंपरा में कल्पनाशील विचार-उत्पादन के साथ विचारों के चयन, मूल्यांकन और क्रियान्वयन पर भी बल दिया गया। Grohman, Wodniecka और Klusak (2017) ने रचनात्मक तथा आलोचनात्मक चिंतन के संबंध का अध्ययन करते हुए यह प्रश्न उठाया कि दोनों प्रक्रियाएँ स्वतंत्र हैं अथवा एक-दूसरे से अंतःक्रिया करती हैं। यह विमर्श प्रस्तुत शोध के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि सामाजिक समस्याओं के समाधान में नवीन विचार उत्पन्न करना और उनके परिणामों का आलोचनात्मक परीक्षण करना दोनों आवश्यक हैं।

6.2 ग्रीन का सहयोगात्मक दृष्टिकोण

ग्रीन के दृष्टिकोण में व्यवहारगत कठिनाइयों को अनसुलझी समस्याओं और कौशलगत आवश्यकताओं के संदर्भ में समझने पर बल दिया गया है। इसका महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि यह दंडात्मक प्रतिक्रिया के स्थान पर संवाद और संयुक्त समाधान की संभावनाओं को सामने लाता है। Ollendick और उनके सहलेखकों (2016) ने विरोधी-अवज्ञाकारी विकार (Oppositional Defiant Disorder—ODD) से संबंधित बच्चों में Collaborative & Proactive Solutions की तुलना Parent Management Training तथा प्रतीक्षा-सूची नियंत्रण समूह से की। अध्ययन में 7–14 वर्ष की आयु के 134 बच्चों को शामिल किया गया। यह नियंत्रित परीक्षण CPS के नैदानिक उपयोगिता-संबंधी साक्ष्य के रूप में उल्लेखनीय है; हालाँकि इसके निष्कर्षों को सीधे संपूर्ण समाज या सभी शैक्षिक संस्थानों पर लागू नहीं किया जा सकता।

6.3 OECD का सहयोगात्मक समस्या-समाधान आकलन

OECD की PISA 2015 रिपोर्ट ने सहयोगात्मक समस्या-समाधान को एक विशिष्ट दक्षता के रूप में मापा। इसमें यह देखा गया कि विद्यार्थी किस प्रकार दूसरों के साथ जानकारी साझा करते हैं, समूह में समन्वय स्थापित करते हैं, मतभेदों का प्रबंधन करते हैं और साझा लक्ष्य की दिशा में कार्य करते हैं। OECD (2017) के अनुसार, इस आकलन में 52 देशों एवं अर्थव्यवस्थाओं ने भाग लिया और 51 के परिणाम प्रस्तुत किए गए। रिपोर्ट ने सहयोगात्मक दक्षता और शिक्षा के विभिन्न परिणामों के बीच संबंधों का विश्लेषण किया। इस प्रकार सहयोग को केवल व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि सामाजिक अंतःक्रिया तथा समूह में कार्य करने की क्षमता के रूप में भी देखा गया।

6.4 साहित्य से प्राप्त शोध-अंतराल

पूर्ववर्ती साहित्य में CPS के मनोवैज्ञानिक, व्यवहारगत और शैक्षिक पक्षों पर उपयोगी कार्य उपलब्ध हैं। फिर भी इन मॉडलों को सामाजिक संबंधों, संस्थागत पदानुक्रम, सामूहिक सहभागिता तथा सामाजिक समावेशन की दृष्टि से एकीकृत रूप में समझने की आवश्यकता बनी रहती है। प्रस्तुत अध्ययन इसी अंतराल को ध्यान में रखते हुए दोनों मॉडलों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करता है। यह किसी नए क्षेत्रीय सर्वेक्षण का दावा

नहीं करता, बल्कि पूर्ववर्ती साहित्य और प्रकाशित आँकड़ों के आधार पर विश्लेषणात्मक निष्कर्ष विकसित करता है।

7. शोध पद्धति

7.1 शोध की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसमें किसी नए प्राथमिक सर्वेक्षण अथवा प्रयोग के परिणाम प्रस्तुत नहीं किए गए हैं।

7.2 आँकड़ों के स्रोत

अध्ययन के लिए वर्ष 2022 से पूर्व प्रकाशित निम्नलिखित स्रोतों को आधार बनाया गया है:

1. OECD की PISA 2015 सहयोगात्मक समस्या-समाधान रिपोर्ट, 2017।
2. Ollendick एवं सहलेखकों का CPS तथा Parent Management Training पर नियंत्रित नैदानिक परीक्षण, 2015 में ऑनलाइन प्रकाशित तथा 2016 में पत्रिका के अंक में प्रकाशित।
3. Grohman, Wodniecka एवं Klusak का रचनात्मक तथा आलोचनात्मक चिंतन पर शोध, 2017।
4. ओसबोर्न–पार्न्स परंपरा से संबंधित प्रकाशित सैद्धांतिक साहित्य।

7.3 विश्लेषण की पद्धति

साहित्य का विषयगत विश्लेषण करते हुए निम्नलिखित आयाम निर्धारित किए गए:

- संवाद एवं पारस्परिक समझ।
- समस्या की पहचान और पुनर्परिभाषा।
- विचारों की विविधता तथा तार्किक चयन।
- समूह-सहभागिता एवं सामूहिक निर्णय।
- सामाजिक और संस्थागत परिस्थितियाँ।
- व्यवहार परिवर्तन तथा समाधान की व्यावहारिकता।

7.4 अध्ययन की समय-सीमा

शोध का साक्ष्य-आधार 31 दिसंबर 2021 तक प्रकाशित साहित्य एवं आँकड़ों पर केंद्रित है। बाद के वर्षों के निष्कर्षों को विश्लेषण में प्रमाण के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है।

7.5 अध्ययन की सीमाएँ

यह अध्ययन द्वितीयक साहित्य पर आधारित है। इसमें भारत के किसी विशिष्ट विद्यालय, महाविद्यालय अथवा समुदाय से प्राथमिक आँकड़े एकत्र नहीं किए गए हैं। OECD के अंतरराष्ट्रीय परिणामों को भारतीय विद्यार्थियों का प्रत्यक्ष प्रतिनिधि आँकड़ा नहीं माना गया है। इसी प्रकार बाल-व्यवहार से संबंधित नैदानिक निष्कर्षों को व्यापक सामाजिक परिस्थितियों पर लागू करते समय सावधानी आवश्यक है।

8. द्वितीयक आँकड़ों का विश्लेषण

8.1 OECD PISA 2015: सहयोगात्मक दक्षता का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

OECD की PISA 2015 रिपोर्ट सहयोगात्मक समस्या-समाधान के महत्त्व को समझने के लिए एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय स्रोत है।

सूचक	प्रकाशित तथ्य	समाजशास्त्रीय महत्त्व
आकलन में भागीदारी	52 देश एवं अर्थव्यवस्थाएँ	सहयोगात्मक दक्षता में अंतरराष्ट्रीय रुचि
प्रस्तुत परिणाम	51 देश एवं अर्थव्यवस्थाएँ	तुलनात्मक विश्लेषण का आधार
OECD औसत	500 अंक	सहयोगात्मक समस्या-समाधान के लिए निर्धारित संदर्भ-बिंदु
सिंगापुर का औसत	561 अंक	आकलन में सर्वोच्च प्रदर्शन
जापान का औसत	552 अंक	उच्च सहयोगात्मक प्रदर्शन का उदाहरण
लैंगिक अंतर	भाग लेने वाली प्रत्येक शिक्षा-व्यवस्था में लड़कियों का औसत प्रदर्शन लड़कों से 29 अंक अधिक	सहयोगात्मक दक्षता में लैंगिक अंतर का परीक्षण

स्रोत: OECD (2017), *PISA 2015 Results, Volume V: Collaborative Problem Solving*।

इन आँकड़ों से तीन प्रमुख विश्लेषणात्मक बिंदु सामने आते हैं। प्रथम, सहयोगात्मक समस्या-समाधान का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यवस्थित आकलन संभव है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सहयोग को केवल व्यक्तिगत सद्भावना के रूप में नहीं, बल्कि कुछ हद तक मापी जा सकने वाली दक्षता के रूप में भी समझा जा सकता है। द्वितीय, सहयोगात्मक प्रदर्शन में विभिन्न शिक्षा-व्यवस्थाओं के बीच अंतर दिखाई देता है। हालाँकि केवल इन अंकों के आधार पर किसी देश की शैक्षिक नीति, सामाजिक संस्कृति या संस्थागत व्यवस्था को प्रदर्शन का प्रत्यक्ष कारण घोषित नहीं किया जा सकता। इसके लिए अतिरिक्त तुलनात्मक शोध आवश्यक है। तृतीय, रिपोर्ट में पाया गया लैंगिक अंतर यह संकेत देता है कि सहयोगात्मक दक्षता के अध्ययन में लैंगिक समाजीकरण, सामाजिक अपेक्षाओं और सहभागिता के अवसरों की भूमिका पर आगे विचार किया जा सकता है। तथापि 29 अंकों के अंतर को जन्मजात क्षमता का प्रमाण मानना अनुचित होगा। यह भी उल्लेखनीय है कि PISA 2015 का आकलन मुख्यतः 15 वर्षीय विद्यार्थियों की दक्षताओं पर केंद्रित था। इसके निष्कर्षों को सभी आयु-वर्गों अथवा भारतीय विद्यार्थियों पर स्वतः लागू नहीं किया जाना चाहिए।

8.2 बाल-व्यवहार संबंधी नियंत्रित परीक्षण

Ollendick एवं सहलेखकों (2016) के अध्ययन में विरोधी-अवज्ञाकारी विकार से संबंधित 7–14 वर्ष के 134 बच्चों को तीन समूहों में यादृच्छिक रूप से आवंटित किया गया। इनमें Collaborative & Proactive Solutions, Parent Management Training तथा प्रतीक्षा-सूची नियंत्रण समूह सम्मिलित थे। यह अध्ययन महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें CPS का परीक्षण केवल सैद्धांतिक स्तर पर नहीं, बल्कि एक नियंत्रित नैदानिक अनुसंधान प्रारूप में किया गया। समाजशास्त्रीय दृष्टि से इसका महत्त्व इस बात में है कि बाल-व्यवहार को समझने तथा उसमें सुधार के लिए अभिभावकीय अंतःक्रिया, व्यवहारगत अपेक्षाओं और समस्या-समाधान की प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जा सकता है। फिर भी अध्ययन में सम्मिलित बच्चों की विशिष्ट नैदानिक स्थिति तथा शोध की परिस्थितियों को ध्यान में रखना आवश्यक है। इस आधार पर यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि प्रत्येक प्रकार के पारिवारिक विवाद, विद्यालयी अनुशासन या सामुदायिक संघर्ष में CPS समान प्रभाव उत्पन्न करेगा।

8.3 रचनात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन का संबंध

Grohman, Wodniecka एवं Klusak (2017) का अध्ययन रचनात्मक और आलोचनात्मक चिंतन के बीच संबंध को समझने के लिए प्रासंगिक है। रचनात्मक समस्या-समाधान में विचारों का व्यापक उत्पादन तभी उपयोगी बनता है, जब उन विचारों का परीक्षण उपलब्ध प्रमाणों, व्यावहारिक सीमाओं और संभावित परिणामों के आधार पर किया जाए। इस संदर्भ में अपसारी तथा अभिसारी चिंतन को प्रतिस्पर्धी प्रक्रियाओं के बजाय परस्पर पूरक प्रक्रियाओं के रूप में देखना अधिक उपयुक्त है। सामाजिक समस्याओं के उदाहरण के रूप में महाविद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ाने की समस्या को लिया जा सकता है। इसके समाधान के लिए केवल दंड बढ़ाने अथवा उपस्थिति अनिवार्य करने का विचार पर्याप्त नहीं होगा। विद्यार्थियों से संवाद, परिवहन की कठिनाइयों की पहचान, समय-सारिणी का परीक्षण, परामर्श तथा शैक्षिक सहभागिता बढ़ाने के विकल्पों पर विचार करना आवश्यक हो सकता है। इसके बाद प्रत्येक विकल्प की व्यवहार्यता का मूल्यांकन करके समाधान लागू किया जा सकता है। यह उदाहरण अध्ययन के सैद्धांतिक अनुप्रयोग को स्पष्ट करता है; इसे किसी वास्तविक महाविद्यालय में प्राप्त अनुभवजन्य परिणाम नहीं माना जाना चाहिए।

9. समाजशास्त्रीय विवेचन

9.1 सामाजिक अंतःक्रिया और पारस्परिक समझ

समस्या-समाधान केवल किसी समस्या का बौद्धिक उत्तर खोजने की प्रक्रिया नहीं है। अनेक सामाजिक समस्याओं में संबंधित व्यक्तियों की धारणाएँ, भावनाएँ, अनुभव और अपेक्षाएँ भी शामिल होती हैं। सहयोगात्मक मॉडल व्यक्ति को दूसरे पक्ष के दृष्टिकोण को समझने के लिए प्रेरित करता है। इससे संवाद की संभावनाएँ बढ़ सकती हैं तथा परस्पर विरोधी धारणाओं की पहचान की जा सकती है। परंतु संवाद तभी सार्थक होता है, जब सभी पक्षों को अपनी बात रखने का वास्तविक अवसर मिले। केवल औपचारिक चर्चा, जिसमें निर्णय पहले ही निर्धारित हो, सहयोगात्मक प्रक्रिया का पर्याप्त उदाहरण नहीं है।

9.2 सामाजिक अधिगम और व्यवहार परिवर्तन

परिवार तथा शैक्षिक संस्थान सामाजिक अधिगम के प्रमुख माध्यम हैं। व्यक्ति इन संस्थाओं में नियमों, भूमिकाओं, सहयोग, प्रतिस्पर्धा और संघर्ष के प्रबंधन से संबंधित व्यवहार सीखता है। यदि परिवार अथवा विद्यालय में समस्याओं पर चर्चा करने, कारणों की पहचान करने और संयुक्त समाधान विकसित करने की परंपरा विकसित होती है, तो व्यक्ति को संवादपूर्ण व्यवहार का अभ्यास प्राप्त हो सकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि सहयोगात्मक प्रक्रिया प्रत्येक परिस्थिति में सफल होगी। व्यवहार परिवर्तन के लिए निरंतर अभ्यास, स्पष्ट अपेक्षाएँ, उचित संसाधन तथा संस्थागत समर्थन भी आवश्यक हो सकते हैं।

9.3 समूह-गतिशीलता और सामूहिक निर्णय

समूह में कार्य करने के दौरान ज्ञान, अनुभव और दृष्टिकोणों की विविधता नए समाधान उत्पन्न करने में सहायक हो सकती है। दूसरी ओर, समूह में प्रभावशाली सदस्यों का वर्चस्व, सहमति का दबाव और अल्पमत की उपेक्षा रचनात्मकता को सीमित कर सकती है। रचनात्मक समस्या-समाधान की प्रक्रिया में सभी सदस्यों को विचार प्रस्तुत करने का अवसर देना तथा विकल्पों का प्रमाण-आधारित मूल्यांकन करना इसलिए आवश्यक है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करता है कि सामूहिक निर्णय की

गुणवत्ता केवल सदस्यों की व्यक्तिगत क्षमताओं पर निर्भर नहीं करती, बल्कि समूह के भीतर शक्ति के वितरण और सहभागिता के नियमों से भी प्रभावित होती है।

9.4 सामाजिक नियंत्रण और संस्थागत अनुशासन

विद्यालय, महाविद्यालय तथा अन्य संस्थाएँ सामाजिक मानदंडों और अनुशासन के माध्यम से अपने उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। किंतु अनुशासन और संवाद को परस्पर विरोधी मानना आवश्यक नहीं है।

सहयोगात्मक दृष्टिकोण संस्थागत अपेक्षाओं को स्पष्ट रखते हुए संबंधित व्यक्तियों की कठिनाइयों को समझने का अवसर देता है। उदाहरणार्थ, कक्षा में बार-बार व्यवधान उत्पन्न होने पर केवल दंड देने के स्थान पर उसके कारणों, कक्षा के वातावरण, शिक्षण पद्धति तथा विद्यार्थी की आवश्यकताओं की जाँच की जा सकती है। इसके साथ ही, सुरक्षा, समानता और दूसरों के अधिकारों की रक्षा के लिए आवश्यक नियमों को बनाए रखना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। सहयोग का आशय अनुशासन का पूर्ण निषेध नहीं, बल्कि समस्याओं के समाधान में न्यायसंगत और सहभागितापरक प्रक्रिया अपनाना है।

9.5 सामाजिक समावेशन और लैंगिक दृष्टिकोण

समाज में आयु, लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, भाषा तथा सांस्कृतिक अनुभवों के आधार पर व्यक्तियों के अवसरों में अंतर हो सकता है। ऐसी परिस्थितियों में सामूहिक समस्या-समाधान तभी समावेशी होगा, जब विभिन्न सामाजिक समूहों के अनुभवों को उचित महत्त्व दिया जाए। OECD के PISA 2015 निष्कर्षों में पाया गया लैंगिक अंतर इस विषय में आगे अनुसंधान की आवश्यकता को रेखांकित करता है। यह अंतर अपने आप में सामाजिक कारणों को सिद्ध नहीं करता, परंतु यह प्रश्न अवश्य उठाता है कि सहयोगात्मक दक्षता के विकास में सामाजिक अपेक्षाओं और सहभागिता के अवसरों का क्या योगदान है।

इस प्रकार सामाजिक समावेशन को समस्या-समाधान की प्रक्रिया का केंद्रीय मानदंड बनाया जाना चाहिए।

10. भारतीय सामाजिक एवं शैक्षिक संदर्भ में उपयोगिता

10.1 परिवार में

अभिभावक और बच्चों के बीच संवाद, समय-प्रबंधन, अध्ययन, घरेलू जिम्मेदारियों तथा व्यवहारगत अपेक्षाओं से संबंधित समस्याओं में सहयोगात्मक प्रक्रिया अपनाई जा सकती है। इसमें बच्चे की कठिनाइयों को समझने के साथ अभिभावकों की वास्तविक चिंताओं को स्पष्ट करना आवश्यक है।

10.2 विद्यालय एवं महाविद्यालय में

शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों, कक्षा में सहभागिता, समूह-परियोजनाओं, उपस्थिति तथा अनुशासन से संबंधित समस्याओं में दोनों मॉडलों की अवधारणाएँ उपयोगी हो सकती हैं। रचनात्मक समस्या-समाधान के माध्यम से विकल्प विकसित किए जा सकते हैं, जबकि सहयोगात्मक संवाद के माध्यम से संबंधित पक्षों की चिंताओं को समझा जा सकता है।

10.3 उच्च शिक्षा संस्थानों में

महाविद्यालयों में प्रशासन, शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थियों के बीच उत्पन्न होने वाली समस्याओं के समाधान हेतु सहभागितापरक समितियाँ, संरचित विचार-विमर्श और समस्या-विश्लेषण की प्रक्रियाएँ विकसित की जा सकती हैं। उदाहरणार्थ, पुस्तकालय के उपयोग में कमी की समस्या के समाधान के लिए विद्यार्थियों की

आवश्यकताओं का संकलन, उपलब्ध संसाधनों का मूल्यांकन, समय-सारिणी की समीक्षा और उपयोगिता के आकलन की प्रक्रिया अपनाई जा सकती है।

10.4 समुदाय में

स्थानीय संसाधनों के उपयोग, स्वच्छता, जल-संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक सुविधाओं से संबंधित समस्याओं में विभिन्न समूहों की सहभागिता आवश्यक होती है। रचनात्मक समस्या-समाधान के माध्यम से विकल्प विकसित किए जा सकते हैं तथा सहयोगात्मक प्रक्रिया से साझा हितों और मतभेदों को समझा जा सकता है। इन संभावनाओं को प्रभावी व्यवहार में बदलने के लिए स्थानीय परिस्थितियों, उपलब्ध संसाधनों और संस्थागत क्षमताओं के अनुसार योजना तैयार करना आवश्यक होगा।

11. प्रमुख निष्कर्ष

उपलब्ध साहित्य और द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आते हैं:

1. **समस्या-समाधान बहुआयामी प्रक्रिया है।** इसमें संज्ञानात्मक कौशल के साथ सामाजिक संबंध, संवाद और संस्थागत परिस्थितियाँ भी महत्त्वपूर्ण हैं।
2. **दोनों CPS मॉडलों के उद्देश्य भिन्न, लेकिन कुछ प्रक्रियाएँ पूरक हैं।** सहयोगात्मक एवं अग्रसक्रिय समाधान व्यवहारगत समस्याओं और पारस्परिक चिंताओं पर बल देता है, जबकि रचनात्मक समस्या-समाधान विचारों के सृजन, चयन और क्रियान्वयन पर केंद्रित है।
3. **सहयोगात्मक दक्षता का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन संभव है।** OECD के PISA 2015 आकलन ने इसे एक विशिष्ट शैक्षिक दक्षता के रूप में मापने का उदाहरण प्रस्तुत किया।
4. **नैदानिक साक्ष्य और सामाजिक निष्कर्षों में अंतर करना आवश्यक है।** CPS पर नियंत्रित परीक्षण इसकी विशिष्ट नैदानिक उपयोगिता के अध्ययन में योगदान देता है, लेकिन इससे सभी सामाजिक परिस्थितियों में समान प्रभाव का निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता।
5. **सृजनात्मकता और आलोचनात्मक मूल्यांकन का संतुलन आवश्यक है।** अनेक विकल्प उत्पन्न करना उपयोगी है, किंतु समाधान की व्यवहार्यता और सामाजिक परिणामों का परीक्षण भी अनिवार्य है।
6. **सामाजिक समावेशन प्रभावी सहयोग की महत्त्वपूर्ण शर्त है।** समूह में सभी सदस्यों को अपनी बात रखने का अवसर और निर्णय-प्रक्रिया में वास्तविक सहभागिता मिलनी चाहिए।
7. **भारतीय संस्थानों में इन मॉडलों के उपयोग की संभावनाएँ हैं।** तथापि उनकी प्रभावशीलता का प्रमाण स्थापित करने के लिए स्थानीय स्तर पर अनुभवजन्य शोध की आवश्यकता है।

12. सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

1. विद्यालयों और महाविद्यालयों में संवाद तथा समस्या-समाधान पर आधारित गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाए।
2. शिक्षकों और अभिभावकों को व्यवहारगत समस्याओं के कारणों की पहचान तथा सहयोगात्मक संवाद के संबंध में प्रशिक्षण दिया जाए।

3. समूह-कार्य में विचारों की विविधता, सम्मानजनक असहमति और प्रमाण-आधारित निर्णय को महत्त्व दिया जाए।
4. संस्थागत समस्याओं के समाधान के लिए संबंधित पक्षों से व्यवस्थित प्रतिक्रिया प्राप्त करने की व्यवस्था विकसित की जाए।
5. रचनात्मक विचारों के मूल्यांकन में व्यावहारिकता, संसाधनों, सामाजिक न्याय और दीर्घकालीन प्रभावों को शामिल किया जाए।
6. लैंगिक तथा सामाजिक-आर्थिक विविधताओं को ध्यान में रखते हुए सहभागिता के समान अवसर सुनिश्चित किए जाएँ।
7. भारतीय विद्यालयों, महाविद्यालयों और समुदायों में CPS के विभिन्न स्वरूपों की उपयोगिता का परीक्षण करने के लिए क्षेत्रीय एवं तुलनात्मक अध्ययन किए जाएँ।
8. भविष्य के शोध में पूर्व-पश्चात आकलन, तुलनात्मक समूह तथा मान्य मापन उपकरणों का उपयोग करके परिणामों की जाँच की जाए।

13. उपसंहार

समस्या-समाधान की प्रभावशीलता केवल इस बात से निर्धारित नहीं होती कि किसी समस्या का उत्तर कितनी शीघ्रता से खोज लिया गया, बल्कि इससे भी निर्धारित होती है कि समस्या को कितनी गहराई से समझा गया, संबंधित पक्षों की चिंताओं को कितना महत्त्व दिया गया और प्रस्तावित समाधान कितना व्यावहारिक एवं न्यायसंगत है। सहयोगात्मक एवं अग्रसक्रिय समाधान मॉडल व्यवहारगत समस्याओं के संदर्भ में संवाद, सहानुभूति और संयुक्त समाधान की उपयोगिता पर बल देता है। इसके विपरीत, रचनात्मक समस्या-समाधान मॉडल नवीन विचारों के सृजन, तार्किक मूल्यांकन और क्रियान्वयन को व्यवस्थित करता है। दोनों दृष्टिकोणों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति की समस्या-समाधान क्षमता सामाजिक अंतःक्रिया, समूह-गतिशीलता और संस्थागत वातावरण से अलग नहीं है। परिवार, विद्यालय, उच्च शिक्षा और समुदाय में इन दृष्टिकोणों का संदर्भानुकूल उपयोग संवादपूर्ण तथा सहभागितापरक वातावरण के विकास में सहायक हो सकता है। किंतु इनकी प्रभावशीलता को सार्वभौमिक मानने के बजाय वैज्ञानिक परीक्षण, स्थानीय साक्ष्य और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर समझना आवश्यक है। अंततः यह कहा जा सकता है कि **सार्थक समस्या-समाधान वह प्रक्रिया है, जिसमें समस्या की सही पहचान, विविध विचारों का सम्मान, तार्किक मूल्यांकन और सामूहिक उत्तरदायित्व एक-दूसरे के पूरक बनते हैं।** यही दृष्टिकोण सामाजिक संबंधों को अधिक संवेदनशील, संस्थागत निर्णयों को अधिक सहभागितापरक तथा सामुदायिक जीवन को अधिक रचनात्मक बनाने की दिशा में योगदान दे सकता है।

14. संदर्भ सूची (References)

Grohman, M., Wodniecka, Z., & Klusak, M. (2017). Creative and critical thinking: Independent or overlapping components? Thinking Skills and Creativity, 25, 141–151. https://doi.org/10.1016/j.tsc.2017.07.005

Mo, J. (2017). Collaborative problem solving. PISA in Focus, No. 78. OECD Publishing, Paris. https://doi.org/10.1787/cdae6d2e-en

OECD. (2017). PISA 2015 Results (Volume V): Collaborative Problem Solving. OECD Publishing, Paris. https://doi.org/10.1787/9789264285521-en

Ollendick, T. H., Greene, R. W., Austin, K. E., Fraire, M. G., Halldorsdottir, T., Allen, K. B., et al. (2016). Parent Management Training (PMT) and Collaborative & Proactive Solutions (CPS): A randomized control trial for oppositional youth. Journal of Clinical Child & Adolescent Psychology, 45(5), 591–604. https://doi.org/10.1080/15374416.2015.1004681

Osborn, A. F. (1963). Applied Imagination: Principles and Procedures of Creative Problem-Solving (3rd revised ed.). Charles Scribner's Sons.

Parnes, S. J. (Ed.). (1967). Creative Behavior Guidebook. Charles Scribner's Sons.

Greene, R. W. (2014). The Explosive Child: A New Approach for Understanding and Parenting Easily Frustrated, Chronically Inflexible Children (5th ed.). HarperCollins.